राज्य अध्याय 36

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता के लिए और उसकी आवाज सुनने के लिए उसके द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना*** करें। अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश देने के विषय में इस पाठ को प्रभु को प्रतिबद्ध करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट)	***(शांत समय)***
		यशायाह 41,42,45 और 46

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (यशायाह 41,42,45 और 46) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट)	***(रोमियों में प्रमुख पद)***
		रोमियों में मुख्य पदों का पुनरावलोकन करें

दो-दो करके रोमियों की आखरी पाँच याद किये हुए प्रमुख वचनों का ***पुनरावलोकन*** करें।

(11) रोमियों 8:1. अतः अब जो मसीह में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं।
(12) रोमियों 8:38-39. क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ्य, न ऊंचाई, न गहराई, और न कोई और सृष्टि हमें परमेश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु यीशु मसीह में है, अलग कर सकेगी।
(13) रोमियों 10:9-10. कि यदि तू अपने मुंह से "यीशु को प्रभु जानकर" अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है।
(14) रोमियों 10:12. यहूदियों और यूनानियों में कुछ भेद नहीं, इसलिये कि वह सब का प्रभु है और अपने सब नाम लेनेवालों के लिये उदार है।
(15) रोमियों 10:17. अतः विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट)	***(रोमियों की पत्री)***
		रोमियों 10:1-21

परिचय। बाइबल अध्ययन के पांच चरणों का इस्तेमाल करते हुए **रोमियों 10:1-21** का साथ मिलकर अध्ययन करें।

रोमियों अध्याय 9 से 11 में पौलुस को प्रदर्शित करता है कि अविश्वासी यहूदियों का इन्कार और विश्वास करने वाले अन्यजातियों का उद्धार बाइबल की शिक्षा से सहमत है। इसके कारण हैं:

- यह परमेश्वर की वाचा की प्रतिज्ञा के विरोध में नहीं था, क्योंकि **परमेश्वर के पास जिसे वह चाहता है**

उसका चुनाव करने की और जिसे वह चाहता है उसे कठोर करने की सम्प्रभुत्व अधिकार है (रोमियों 9:6-24)।

- पुराने नियम के प्रकाशन में इस बात की स्पष्ट रूप से भविष्यद्वाणी की गई है (रोमियों 9:25-29; रोमियों 10:18-21) इसी कारण से **इस्राएल के पास इस बात का कोई बहाना नहीं है कि भविष्यद्वाणी की गई यह परिस्थिति वास्तविकता बन गई थी।**
- **पुराने नियम के समय के दौरान उद्धार का यह संदेश इस्राएलियों के लिए उसी प्रकार से सुलभ था जिस प्रकार से यह नए नियम के इस समय के दौरान अन्यजातियों और यहूदियों के लिए सुलभ है** (रोमियों 10:5-8)।
- पुराने नियम के समय में भी और नए नियम के समय में भी उद्धार केवल विश्वास के द्वारा सम्भव है (तुलना करें उत्पत्ति 15:6; गलातियों 3:6-9,26-29)। **लोगों को उनके अविश्वास के कारण अस्वीकार कर दिया जाता है और उनके विश्वास के कारण स्वीकार किया जाता है** (रोमियों 9:30-33; रोमियों 10:1-4,11,17)।
- इसी कारण से **"यहूदियों और अन्यजातियों के मध्य में कोई अंतर नहीं है"** (रोमियों 10:12-13)!

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 10:1-21 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

10:1

खोज 1. **खोए हुए लोगों पर परमेश्वर की धार्मिकता के सुसमाचार का प्रचार करना।**

रोमियों अध्याय 9 में प्रेरित पौलुस यह शिक्षा देता है कि परमेश्वर के सम्प्रभुत्व का विशेषाधिकार उसकी दया के लिए बनी वस्तुओं पर उसकी दया को प्रदर्शित करना है और उसके क्रोध के लिए बनी वस्तुओं पर उसकी दया को रोके रखना है (अर्थात्, जिसके लिए वह इच्छा करता है उसका उद्धार करना और जिसके लिए वह इच्छा करता है उसके लिए कठोर हो जाना यह उसका अधिकार है (रोमियों 10:18,22-23)।

परन्तु यह तथ्य इस बात को निर्धारित नहीं करता कि मसीही जन होने के नाते हमें इस संसार के खोए हुए लोगों के साथ सम्बन्ध रखना चाहिए! हालाँकि परमेश्वर के पास उन लोगों के लिए आदर के साथ एक संप्रभुत्व इच्छा है जिनका वह उद्धार करता है और उसने उस इच्छा को हम पर प्रकट नहीं किया था। हमारा उत्तरदायित्व संसार के सब देशों के खोए हुए लोगों के लिए असल में चिन्ता करना, उनके लिए प्रार्थना करना और उन पर सुसमाचार का प्रचार करना है। चुनाव करना परमेश्वर का विशेषाधिकार है, परन्तु सुसमाचार की घोषणा करना हमारा उत्तरदायित्व और कार्य है (रोमियों 10:1)!

10:2-4

खोज 2. **व्यवस्था का पालन करने के द्वारा धर्मी ठहराया जाना (तोरह, शरिया) एक गलतफहमी है।**

(1) **दो प्रकार की धार्मिकता।**

यह अनुच्छेद दो प्रकार की धार्मिकता में विषमता दर्शाता हैः

- व्यवस्था आधारित धार्मिकता, जिसका यहूदी लोग पालन करते थे और जिसका विचार यह है कि परमेश्वर उस जन को धर्मी ठहराएगा जो मूसा की व्यवस्था का या किसी भी अन्य व्यवस्था का पालन करता है।
- विश्वास आधारित धार्मिकता, जिसे परमेश्वर अनुग्रह के द्वारा प्रदान करता है और सत्य है कि परमेश्वर अनुग्रह के द्वारा उस धार्मिकता को लोगों को प्रदान करता है जिसे मसीह ने उस हर जन के लिए प्राप्त किया जो यीशु मसीह पर विश्वास करता है।

(2) **धार्मिकता प्राप्त करने में इस्राएल की विफलता (रोमियों 10:2-3)।**

हालाँकि अपने व्यवस्था के कामों के द्वारा इस्राएली जाति परमेश्वर की दृष्टि में धार्मिकता को प्राप्त करने में बड़ी उत्साही थी (जैसा कि उन्होंने व्यवस्था की व्याख्या की थी), परन्तु उनका उत्साह समझ पर आधारित नहीं था! परमेश्वर की धार्मिकता को प्राप्त करने में इस्राएल इसलिए विफल हो गया था, क्योंकि वे यह समझने में विफल हो गए थे कि परमेश्वर की धार्मिकता को केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता था (रोमियों 10:2)।

परमेश्वर की धार्मिकता को प्राप्त करने में इस्राएल जाति इसलिए विफल हो गई थी, क्योंकि उसने न केवल परमेश्वर की धार्मिकता के अधीन होने से इन्कार किया था, वरन् उसने अपनी ही धार्मिकता को स्थापित करने का प्रयास भी किया था (रोमियों 10:3)।

(3) **यीशु मसीह व्यवस्था का समापन है,**
अर्थात्, व्यवस्था का अंत (धार्मिकता को प्राप्त करने के धार्मिक अर्थों के रूप में)।
या यीशु मसीह व्यवस्था का लक्ष्य (पूर्णता) है
(पुराने नियम में परमेश्वर के प्रकाशन के रूप में) (रोमियों 10:4)

रोमियों 10:4 के शब्दों का अनुवाद इन दो तरीकों, व्यवस्था का समापन और लक्ष्य में किया जा सकता है...

मसीह "व्यवस्था" का "समापन (अंत)" है। "व्यवस्था" को मूसा की व्यवस्था का पालन करने के द्वारा धार्मिकता प्राप्त करने के विचार के द्वारा समझा गया है जैसे कि व्यवस्था के उन यहूदी धार्मिक गुरुओं और फरीसियों के द्वारा व्याख्या की गई थी जिन्होंने बाइबल में दी गई व्यवस्था में कम से कम 613 अतिरिक्त बातों को जोड़ा था। यीशु मसीह ने यहूदियों की इस गलतफहमी को समाप्त किया था (गलातियों 3:10-13)। किसी भी जन को धार्मिक व्यवस्था का पालन करने के द्वारा धर्मी नहीं ठहराया जाएगा। किसी भी व्यक्ति को केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा ही धर्मी ठहराया जा सकता है।

मसीह "व्यवस्था" का "लक्ष्य (पूर्णता)" है। "व्यवस्था" को पुराने नियम के विचार द्वारा, उसकी नैतिकता, संस्कार और नागरिक नियमों को शामिल करते हुए समझा गया है (मत्ती 5:17)। यीशु मसीह ही (व्यवस्था नहीं) पुराने नियम का लक्ष्य, पूर्णता या वास्तविक विषयवस्तु है! इस रीति से पुराने नियम के समय में रहने वाले लोग आने वाले मसीह में केवल विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहराए गए थे और नए नियम में रहने वाले लोग आ चुके मसीह में केवल विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहराए गए हैं।

दोनों ही अनुवाद सत्य हैं, परन्तु यहाँ उनका आशय सम्भवतः यह हैः "मसीह व्यवस्था का अंत है।"

10:5-8

खोज 3. **पुराने नियम में मसीह पर विश्वास के द्वारा धार्मिकता का संदेश भी है।**

पुराने नियम के प्रकाशन (तोरह या व्यवस्था) से पौलुस यह प्रमाणित करने के लिए दो प्रश्नों का निर्माण करता है कि विश्वास के द्वारा धार्मिकता व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता के बिलकुल विपरीत है।

(1) **लैव्यव्यवस्था 18:5 "व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता" को परिभाषित करता है (रोमियों 10:5)।**
वह बताता है, "जो मनुष्य उनको माने वह उनके कारण जीवित रहेगा।"

न्याय, निन्दा और पाप की सज़ा के परमेश्वर के निरंकुश मानक को व्यवस्था कहा जाता है। एक पूर्णतः पवित्र और धर्मी परमेश्वर को सारे पापों का दंड देने के द्वारा पूर्णतः सिद्ध न्याय करने से कम कुछ भी नहीं चाहिए। क्योंकि कोई भी पापी इस पूरा नहीं कर सकता है और उसे एक ऐसे उद्धारकर्ता की आवश्यकता है जो उस पर विश्वास करने वाले पापी के बदले में दंडित हुआ हो और उसी प्रकार से *प्रायश्चित्त किया* हो।

धर्मी ठहराए जाने (उद्धार) के लिए परमेश्वर की निरंकुश माँग या आवश्यकता को व्यवस्था कहा जाता है। एक पूर्णतः पवित्र और धर्मी परमेश्वर को परमेश्वर के द्वारा स्वीकार किए जाने (बचाए जाने) के लिए पूर्णतः सिद्ध धार्मिकता से कम कुछ भी नहीं चाहिए। क्योंकि यह सिद्धता किसी भी मनुष्य के पास नहीं है, और सभी लोगों को एक ऐसे उद्धारकर्ता की आवश्यकता है जिसने मनुष्य के बदले में इस पूर्णतः सिद्ध धार्मिकता को अर्जित किया हो और जो इस धार्मिकता को उस व्यक्ति पर *मढ़ देता* (सम्बन्धित करना, सम्मिलित करना, एन.आई.वी. में: "श्रेय देना") है जो उस पर विश्वास करता है।

पवित्रता (शुद्धीकरण) के लिए परमेश्वर की निरंकुश माँग या आवश्यकता को व्यवस्था कहा जाता है। एक पूर्णतः पवित्र और धर्मी परमेश्वर को परमेश्वर के द्वारा स्वीकार किए जाने (बचाए जाने) के लिए पूर्णतः सिद्ध पवित्रता (आरम्भ से लेकर अंत तक पवित्र जीवन जीना) से कम कुछ भी नहीं चाहिए। क्योंकि यह सिद्धता किसी भी मनुष्य के पास नहीं है, और सभी लोगों को एक ऐसे उद्धारकर्ता की आवश्यकता है जिसने मनुष्य के बदले में इस पूर्णतः सिद्ध पवित्रता को अर्जित किया हो और जो इस पवित्रता को उस व्यक्ति पर *मढ़ देता है* जो उस पर विश्वास करता है।

परमेश्वर की माँग या आवश्यकता यह है कि सब लोग उसकी आज्ञाओं का (100%) पूरी तरह से पालन करें। पुराने नियम की इस व्याख्या को पौलुस यह प्रमाणित करने हेतु लागू करता है कि इस रीति से कोई भी मनुष्य परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी नहीं ठहर सकता है, क्योंकि किसी भी जन ने परमेश्वर की व्यवस्था का (100%) पूरी तरह से पालन न तो किया है और न ही कोई कर सकता है! "व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता" के तरीके का असफलता के लिए अंत हो गया है!

(2) **व्यवस्थाविवरण 30:11-13 "विश्वास के द्वारा धार्मिकता" की व्याख्या करता है (रोमियों 10:6-7)।**
यह सिखाता है कि यह सत्य सुलभ है और लोगों के निकट है कि क्या जानना है, किस पर विश्वास करना है और किसका पालन करना है। धार्मिकता प्राप्त करने के लिए लोगों को कुछ और करने की आवश्यकता नहीं है। लोगों को इस सत्य को प्राप्त करने के लिए स्वर्ग पर चढ़ जाने, या समुद्र के पार जाने की आवश्यकता नहीं है। पुराने नियम की इस "विश्वास के द्वारा धार्मिकता" की व्याख्या को पौलुस यह प्रमाणित करने हेतु लागू करता है कि हर एक जन के पास परमेश्वर की धार्मिकता तक पहुँच है।

कोई भी जन के पास परमेश्वर की धार्मिकता को प्राप्त कर सकता है:

- यीशु मसीह के स्वर्ग से पृथ्वी पर (2000 वर्षों पूर्व) प्रथम आगमन के द्वारा। किसी भी जन को स्वर्ग पर चढ़कर मसीह को नीचे पृथ्वी पर लाने की आवश्यकता नहीं है और न ही कोई ऐसा कर सकता है (रोमियों 10:6; तुलना करें यूहन्ना 3:13 और मत्ती 11:27)
- कब्र के रसातल से (2000 वर्षों पूर्व) यीशु मसीह के पुनरुत्थान के द्वारा। किसी भी जन को कब्र में उतरकर मसीह का मृतकों में से पुनरुत्थान करने की आवश्यकता नहीं है और न ही कोई ऐसा कर सकता है (रोमियों 10:7)
- सुसमाचार (बीते 2000 वर्षों से लेकर आज तक) प्रचार करने के द्वारा। सुसमाचार का प्रचार करना परमेश्वर की धार्मिकता (उद्धार) के विषय में सच्चाई को पृथ्वी पर रहने वाले प्रत्येक मनुष्य के लिए उपलब्ध कराता है ताकि वह उसे जाने, उस पर विश्वास करे, और उसका पालन करे।
- परमेश्वर के वचन को (वर्तमान में) अपने हृदय में और अपने मुँह में रखने के द्वारा। सुसमाचार परमेश्वर का वचन है जिस पर उस व्यक्ति को अपने हृदय से विश्वास करना चाहिए और अपने मुँह से उसका अंगीकार करना चाहिए (रोमियों 10:8)। "सुसमाचार हर एक विश्वास करने वाले के लिए उद्धार के निमित्त परमेश्वर का सामर्थ्य है" (रोमियों 1:16)।

(3) परमेश्वर की व्यवस्था की आवश्यकताओं को पूरा करने का कार्य मनुष्यों को नहीं, परन्तु यीशु मसीह को सौंपा गया था (रोमियों 10:6-7)।

रोमियों 10:4-5 धार्मिकता की उस स्थिति का वर्णन करता है, जिसे केवल यीशु मसीह ने प्राप्त (अर्जित) किया है। क्योंकि मनुष्यों के इतिहास में यीशु मसीह ही ऐसा एकमात्र है जिसने पृथ्वी पर सिद्ध जीवन को जिया (यूहन्ना 8:46; इब्रानियों 4:15; 7:26-28), जिसने मृत्यु को पराजित किया (मत्ती 28:6-7; 1 कुरिन्थियों 15:20) और अपने पुनरुत्थान के पश्चात सर्वदा के लिए जीवित है (यूहन्ना 11:25; इब्रानियों 7:23-25), मनुष्यों के इतिहास में वही ऐसा एकमात्र है जिसने परमेश्वर की व्यवस्था की आवश्यकताओं को पूरा किया है! वही ऐसा एकमात्र है जिसने "इन कामों को किया और इनके द्वारा जिया" (लैव्यव्यवस्था 18:5; रोमियों 10:5)!

रोमियों 10:6-7 धार्मिकता की ऐसी ही समान स्थिति का वर्णन करता है, जिसे मनुष्य परमेश्वर के निर्मोल अनुग्रह और यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा प्राप्त करते हैं, न कि व्यवस्था का पालन करने के उनके स्वयं के प्रयासों के द्वारा (इफिसियों 2:8-9 भी देखें)।

पौलुस नए नियम की सच्चाई की घोषणा पुराने नियम की परिभाषा (शब्दों) में करता है। वह ऐसा इसलिए कर सकता है, क्योंकि वह इस बात को पहले ही प्रमाणित कर चुका है कि परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी ठहराए जाने का तरीका पुराने नियम के समय में भी वैसा ही था जैसा कि वह इस नए नियम के समय में हैः परमेश्वर की धार्मिकता हमेशा से ही "विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया जाना" रहा है और "व्यवस्था के कामों के द्वारा धर्मी ठहराया जाना" कभी भी नहीं रहा है (रोमियों 1:17; 3:21-22; 4:1-3)!

मूसा ने इस्राएलियों को निर्देश (अन्य बातों के बीच में, व्यवस्था) प्रदान किए *जो पहले से ही परमेश्वर के लोग थे,* उस से थोड़े ही समय पहले जब इस्राएलियों ने प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश किया था (1407 ई.पू.)। परमेश्वर ने उन लोगों पर श्राप डाले जिन्होंने उसकी अवज्ञा की थी (व्यवस्थाविवरण 27:9-26) और उन लोगों को अपनी आशीषें दीं जिन्होंने उसकी आज्ञाओं का पालन किया था (व्यवस्थाविवरण 28:8-14)। उसके पश्चात मूसा ने उन वचनों को बोला था जिनका उद्धरण पौलुस देता है (व्यवस्थाविवरण 30:11-14)। इन वचनों के द्वारा, मूसा ने इस बात पर बल दिया कि इस्राएलियों को *अनुग्रह के संदर्भ में व्यवस्था प्रदान की गई थी (न कि मानवीय कामों अथवा आज्ञाकारिता के संदर्भ में)।* इस्राएलियों के लिए प्रतिज्ञा का देश और उसकी आशीषें परमेश्वर का अनुग्रहकारी उपहार था। और इसके साथ ही धार्मिकता (उद्धार) भी इस्राएलियों के लिए परमेश्वर का अनुग्रहकारी उपहार था। यह व्यवस्था का पालन करने के लोगों के शक्तिशाली प्रयासों का परिणाम कभी भी नहीं था

(व्यवस्थाविवरण 8:17-18; 9:4-6 से तुलना करें), परन्तु यह विश्वास करने वाले हर एक जन के लिए एक अनुग्रहकारी उपहार था और अभी भी है (इब्रानियों 4:1-3)।

जो बात पौलुस कहना चाहता है वह यह है कि धर्मी ठहराए जाने और पवित्रीकरण के लिए परमेश्वर की धर्मी आवश्यकताओं को पूरा करने का कार्य (अर्थात्, आरम्भ से लेकर अंत तक के उद्धार के लिए) मनुष्य को कभी नहीं सौंपा गया था। यह कार्य यीशु मसीह को सौंपा गया था और केवल उसने ही इस कार्य को पूरा किया!

यीशु मसीह परमेश्वर ही था जिसने मनुष्य का रूप धारण किया था (यूहन्ना 1:14)। उसमें विश्वास करने वालों के बदले में उसने नरक की यातनाओं को सहा था (मत्ती 27:46)। वह उनके पापों के प्रायश्चित्त के बलिदान स्वरूप उनके बदले में मरा (मरकुस 10:45; रोमियों 3:25), ताकि परमेश्वर उनको विश्वास के द्वारा धर्मी घोषित करे। वह मृतकों में से इसलिए जी उठा था, ताकि वे लोग नया और पवित्र जीवन जीने के योग्य ठहरें (रोमियों 6:4)। वह स्वर्ग पर चढ़ कर परमेश्वर की दाहिनी ओर जा बैठा, ताकि विश्वास करने वालों पर वह राजा और प्रभु के रूप में शासन करे। प्रभु के रूप में, वह उनके उद्धार के निमित्त इसके आरम्भ (नया जन्म पाने और धर्मी ठहराए जाने के समय) से लेकर इसके अंत (मसीह के द्वितीय आगमन तथा उन लोगों के शरीरों के पुनरुत्थान के समय) तक कार्य करता है। वह विश्वास करने वालों के पूर्ण एवं सिद्ध उद्धार का आश्वासन देता है (रोमियों 8:29-30; तुलना करें फिलिप्पियों 1:6 से)।

मसीह को नीचे लाने के लिए स्वर्ग पर चढ़ जाने का प्रत्येक मानवीय प्रयास, उसके *देह-धारण* की वास्तविकता और महत्व को अस्वीकार करना होगा। और मसीह को निकालने के लिए कब्र में उतरने का प्रत्येक मानवीय प्रयास, उसके *पुनरुत्थान* की वास्तविकता और अहमियत को अस्वीकार करना होगा। किसी भी मनुष्य ने मसीह के जन्म में या यीशु मसीह के मृतकों में से जी उठने में कोई भी योगदान नहीं किया था। कोई भी मनुष्य अपने स्वयं के उद्धार में कोई भी योगदान नहीं कर सकता है! कोई भी मनुष्य यह विचार करते हुए व्यवस्था का पालन करने का प्रयास नहीं कर सकता है कि यह यीशु मसीह के देह-धारण, मृत्यु, पुनरुत्थान, ऊपर चढ़ जाने और सिंहासन पर विराजमान होने जैसी ही बातों को पूरा कर पाएगा! "यीशु मसीह को हमारे पापों के लिए मृत्यु के वश में कर दिया गया था और हमारे धर्मी ठहराए जाने के लिए जीवित कर दिया गया था" (रोमियों 4:25)। यीशु मसीह ने एक विश्वासी के पूर्ण रूप से और सिद्ध रूप से धर्मी ठहराए जाने के लिए आवश्यक हर एक बात को पूरा कर दिया था!

(4) **वह वचन अत्यन्त सुलभ है जिसमें विश्वास की आवश्यकता होती है और जो विश्वास का खंडन करता है (रोमियों 10:8)।**

पौलुस व्यवस्थाविवरण 30:14 का उद्धरण देता है, "यह वचन तेरे बहुत निकट, वरन् तेरे मुँह और मन ही में है"। पौलुस व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में पाए जाने वाले उस "वचन" को अनुग्रहकारी प्रतिज्ञाओं और चेतावनियों के रूप में मान रहा है (व्यवस्थाविवरण 5:6; 6:4-9; 7:7-9; 10:12-13; 11:13-15,22-25; 18:15-18; 26:16-19; 28:1-14), जिसमें प्रतिक्रिया के रूप में विश्वास की आवश्यकता है और जिसमें विश्वास का खंडन किया गया है। व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में पाए जाने वाले यह सारे ही वचन परमेश्वर के *अनुग्रह के संदर्भ में* इस्राएलियों को प्रदान किए गए थे। परमेश्वर ने पहले ही इस्राएलियों को मिस्र के दासत्व से निकालकर छुड़ा लिया था। वह पहले से ही उनका परमेश्वर था और वे भी पहले से ही परमेश्वर के धर्मी ठहराए गए लोग थे (व्यवस्थाविवरण 5:6; तुलना करें निर्गमन 20:1-2 से)। यह वचन इस्राएलियों को *मानवीय कार्यों के संदर्भ में* प्रदान नहीं किए गए थे। इस्राएलियों को धर्मी ठहराए जाने और परमेश्वर के धर्मी ठहराए गए लोग होने के लिए व्यवस्था का पालन करने की आवश्यकता नहीं थी! इसके विपरीत, वे *परमेश्वर के छुड़ाए हुए लोगों के समान जीवन जीने के लिए* बुलाए गए थे!

पौलुस इस "वचन" की व्याख्या इस प्रकार से करता है, "विश्वास का वह वचन जिसका हम प्रचार करते हैं।" "विश्वास का वह वचन" (यूनानी में: to réma tés pisteós) केवल परमेश्वर का वह वचन नहीं है जिसे पुराने नियम (व्यवस्थाविवरण) में प्रकट किया गया है, परन्तु यह परमेश्वर का वह वचन भी है जिसकी नए नियम में घोषणा की गई है। "विश्वास का वह वचन" का अर्थ केवल यह नहीं है कि परमेश्वर का वचन प्रतिक्रिया के रूप में विश्वास की माँग करता है (उसे आवश्यकता है) (व्यक्तिपरक), परन्तु साथ ही में परमेश्वर का वचन लोगों के हृदय में पाए जाने वाले विश्वास का खंडन भी करता है (वस्तुपरक)। विश्वास का वह वचन छुड़ाए जाने के प्रभाव पर बल देने के लिए विश्वास की प्रतिक्रिया को प्रकाश में लाता है (देखें इब्रानियों 11:6-8)।

यदि ऐसा होता है तो परमेश्वर का वचन नए नियम के समान ही पुराने नियम दोनों में ही विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने की ओर अगुवाई करता है। धर्मी ठहराए जाने (उद्धार) का तरीका नए नियम के जैसे ही पुराने नियम में भी बिलकुल एक समान है।

- पुराने नियम के समय में परमेश्वर का वचन लोगों के निकट ही था: "तेरे मुँह और मन ही में है ताकि तू उस पर चले" (व्यवस्थाविवरण 30:14)। इस्राएली लोगों ने पहले से ही परमेश्वर के वचन का अपने मुँह से अंगीकार कर लिया था और अपने मन से उस पर विश्वास कर लिया था! इस्राएली लोग पहले से ही परमेश्वर की प्रजा थे! व्यवस्था का पालन करने के द्वारा इस्राएली लोगों को परमेश्वर की प्रजा नहीं होना था!
- नए नियम के समय में भी परमेश्वर का वचन लोगों के निकट है: "तेरे मुँह में और तेरे मन में है" (रोमियों 10:8)। रोम में रहने वाले मसीही लोगों ने पहले ही सुसमाचार का अपने मुँह से अंगीकार कर लिया था और उस पर अपने मन से विश्वास कर लिया था। कलीसिया भी पहले से ही परमेश्वर के लोगों की थी! उसे भी व्यवस्था का पालन करने के द्वारा परमेश्वर की प्रजा नहीं होना था!

"विश्वास का वह वचन" (वचन 8) "मसीह का वचन" (रोमियों 10:17) है। (यहाँ पर एक सम्बन्ध सूचक है वस्तुपरक समझ के साथ: मसीह के अंतर्वस्तु रूप और व्यक्तिपरक समझ के साथ: मसीह के द्वारा बताया गया। लोग न केवल निष्क्रिय रूप से प्रचारकों को वचन बताते हुए सुनते हैं, वरन् सक्रिय रूप से स्वयं मसीह की वाणी को उनके मन में बोलते हुए सुनते हैं!

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधर पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये रोमियो 1:1-17 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

10:4

प्रश्न 1. **हमें रोमियों 10:4 को कैसे समझना चाहिए: मसीह व्यवस्था का "अंत" है या "लक्ष्य" है?**

ध्यान दें।

देखें नियमावली 11, परिशिष्ट 13।

10:5

प्रश्न 2. **हमें इस सिद्धांत को कैसे समझना चाहिए – "जो मनुष्य इन कामों को करे (परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करे) वह इनके द्वारा जीवित रहेगा"?**

ध्यान दें।

(1) **पाप में गिरने से पूर्व व्यवस्था की आज्ञाकारिता ने धर्मी ठहराए जाने और निर्दोषिता की वास्तविक अवस्था (पद) को बनाए रखा था।**

धर्मी ठहराए जाने (उद्धार) (को बनाए रखना) व्यवस्था का पालन करने के द्वारा केवल पाप में गिरने से पूर्व सम्भव था। क्योंकि आदम ने अनन्त जीवन को पाप में गिरने से पूर्व प्राप्त कर लिया था और उस समय तक पाप नहीं किया था, इसलिए वह परमेश्वर के दृष्टि में धर्मी था। वह इस धर्मी ठहराए जाने को केवल अनाज्ञाकारिता के द्वारा ही गँवा सकता था! उत्पत्ति 2:15-17 में आदम को दिए गए परमेश्वर के निषेध इस आशय से नहीं थे कि इस व्यवस्था का पालन करने के द्वारा आदम अपने धर्मी ठहराए जाने को अर्जित (पूरा करना, पाना) कर सकता था, परन्तु बजाए इसके आदम आज्ञाकारिता के माध्यम से अपनी धर्मी ठहराए जाने की अवस्था (अर्थात्, अनन्त जीवन) को बनाए रख सका (अधिकार में रख पाया) था।

(2) **पाप में गिरने के पश्चात व्यवस्था (नैतिकता) के प्रति आज्ञाकारिता एक विश्वासी के धर्मी जीवन को प्रकट करती है।**

पाप में गिरने के पश्चात, धर्मी ठहराए जाने (उद्धार) के लिए व्यवस्था के काम कभी भी आधार नहीं थे। यह सिद्धांतः "जो मनुष्य इनको माने अथवा इनका पालन (अनिश्चित काल, सक्रिय) करे, वह इनके द्वारा (निश्चितता को प्रदर्शित करने वाला भविष्य काल) जीवित रहेगा" (लैव्यव्यवस्था 18:5) केवल पाप में गिरने से पूर्व निर्दोषिता की अवस्था में धर्मी ठहराए जाने को बनाए रखने का एक सिद्धांत था। यह पाप में गिरने के पश्चात पाप की अवस्था में धार्मिकता को पाने का सिद्धांत कभी भी नहीं था।

लैव्यव्यवस्था 18:1-5 स्पष्ट रूप से यह प्रकट करता है कि धर्मी ठहराए जाने की अवस्था में यह वचन परमेश्वर के अनुमोदन के सिद्धांत का संदर्भ देते हैं। इसका अर्थ वही है जैसा निर्गमन 20:1-17 में है। परमेश्वर के अपनी प्रजा, इस्राएली लोगों को (दासत्व के घर से) छुड़ा लेने के पश्चात (निर्गमन 20:1-2), वह उनको दस आज्ञाओं का पालन करने के द्वारा *परमेश्वर के छुड़ाए हुए लोगों के समान जीने के लिए* आदेश देता है, न कि दस आज्ञाओं का पालन करने के द्वारा परमेश्वर की प्रजा बनने के लिए (निर्गमन 20:3-17)। उसी प्रकार से लैव्यव्यवस्था 18:1-5 को परमेश्वर के छुड़ाए हुए लोगों के लिए निर्देशित किया गया है और यह इस्राएलियों को आदेश देता है कि उनको किस प्रकार से परमेश्वर के छुड़ाए हुए लोगों के जैसे जीवन व्यतीत करना है। परमेश्वर की व्यवस्था (दस आज्ञाओं) का पालन करने के द्वारा, परमेश्वर के लोग परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध को, अनन्त जीवन के अपने अधिकार को और उनके लिए परमेश्वर को अनुमोदन को बनाए रखते हैंः वे (निरंतर) उद्धार पाया हुआ जीवन जीएँगे, वे समृद्ध होंगे, और प्रतिज्ञा के देश में अपने दिनों को लम्बा करेंगे (व्यवस्थाविवरण 5:32-33)।

10:9-10

प्रश्न 3. **मन में विश्वास करने और मुँह से अंगीकार करने के मध्य में क्या सम्बन्ध है?**

ध्यान दें।

(1) **सुसमाचार के संक्षिप्त विवरण।**

नए नियम में सुसमाचार को संक्षिप्त करने के बहुत से अलग-अलग तरीके पाए जाते हैंः

1कुरिन्थियों 15:1-4 में पवित्रशास्त्र के अनुसार सुसमाचार यह है कि मसीह हमारे पापों के लिए मर कर

तीसरे दिन जी उठा था। हमारा उद्धार तभी होता है जब हम सुसमाचार के प्रचार को सुनते हैं, उसे ग्रहण करते हैं, उस पर अपने आप को स्थिर करते हैं और दृढ़ता से उसे पकड़े रहते हैं।

रोमियों 10:9-13 में सुसमाचार यह है कि परमेश्वर ने यीशु मसीह को मृतकों में से जी उठाया और यीशु मसीह ही प्रभु[1] है। हमारा उद्धार तभी होता है जब हम सुसमाचार को सुनते हैं, अपने मनों में उस पर विश्वास करते हैं, प्रभु के नाम को पुकारते हैं और अपने मुँह से उसका अंगीकार करते हैं।

इसी प्रकार से रोमियों 10:9-13 में पौलुस सुसमाचार संदेश के दो दृष्टिकोणों, अर्थात्, यीशु मसीह के मृतकों में से पुनरुत्थान (दो हजार वर्षों पूर्व) और उसके स्वर्ग से सब चीजों पर और सब कुछ पर (वर्तमान समय में) शासन (राज) पर बल देता है। साथ ही में वह सुसमाचार को ग्रहण करने के दो दृष्टिकोणों, अर्थात्, किसी के मन में विश्वास करने और किसी के मुँह से अंगीकार करने पर बल देता है। हालाँकि, यह संक्षिप्त विवरण यह नहीं सिखाता है कि "मन में विश्वास करने" या "मुँह से अंगीकार करने" का उद्धार के सम्बन्ध में एक समान ही क्रिया या प्रभाव हैं।

(2) **मन में विश्वास करने और मुँह से अंगीकार करने के मध्य में सम्बन्ध।**

परमेश्वर के वचन के मन में और मुँह में होने के सम्बन्ध में व्यवस्थाविवरण 30:14 का उद्धरण उसी प्रकार से पुराने नियम और नए नियम में भी सत्य है। वचन 9 में पौलुस "मुँह-मन" के क्रम का उपयोग इसलिए करता है, क्योंकि व्यवस्थाविवरण 30:14 में यही क्रम था। वचन 10 में वह "मन-मुँह" के क्रम का उपयोग इसलिए करता है, क्योंकि यह प्राकृतिक क्रम हैः कोई भी व्यक्ति उस बात का अपने मुँह से अंगीकार करता है जो पहले से ही उसके मन में उपस्थित है (मत्ती 12:34 से तुलना करें)। परमेश्वर की धार्मिकता (उद्धार) को केवल मन में विश्वास करने के माध्यम से प्राप्त किया गया है और यह मुँह से अंगीकार करने की ओर अगुवाई करता है।

हृदय उस बात का केन्द्र है जिसके चारों ओर मनुष्य का जीवन चक्कर लगाता है। यह मनुष्य के मन, इच्छा और भावनाओं का केन्द्र भी है (नीतिवचन 4:23)। यह विश्वास करना आवश्यक है कि परमेश्वर ने मसीह को मृतकों में से जिलाया, क्योंकि पुनरुत्थान ही इस बात को प्रमाणित करता है कि यीशु ही वास्तविक "प्रभु" है (इफिसियों 1:20-23; फिलिप्पियों 2:9-11)। "प्रभु" शब्द (यूनानी मेंः कुरियोस) का अर्थ इससे कम कुछ भी नहीं है कि यीशु ही प्रभु है (इब्रानी में याहवे), पुराने नियम के प्रकाशन में परमेश्वर का यही नाम है (मरकुस 1:3 की यशायाह 40:3 के साथ तुलना करें)। पौलुस कहता है, "मसीह सब के ऊपर परम परमेश्वर है"[2] (रोमियों 9:5)।

धर्मी ठहराए जाने (उद्धार) के सम्बन्ध में "विश्वास करने" और "अंगीकार करने" में एक समान ही क्रिया या प्रभाव नहीं हैं। बिना विश्वास किए "अंगीकार करना" व्यर्थ है (मत्ती 7:21-23 से तुलना करें)। और बिना अंगीकार किए "विश्वास करना" मसीह को अपनाने से इन्कार करना है (तुलना करें मत्ती 10:32; यूहन्ना 12:42)। धर्मी ठहराए जाने (उद्धार) के लिए मन में विश्वास करना अत्यन्त आवश्यक है (यूहन्ना 3:18,36 से तुलना करें)। और भले कामों के समान मुँह से अंगीकार करना इस बात का प्रमाण है कि मन में पाया जाने वाला विश्वास असली और खरा है (इफिसियों 2:8-10; 2 कुरिन्थियों 4:13; याकूब 2:17-22; 1 यूहन्ना 3:18-20)। जो लोग वास्तव में विश्वास करते हैं वे उस बात को कहने में सहायता नहीं कर सकते हैं जो उन्होंने देखा या सुना है (प्रेरितों के काम 4:20; 1 तीमुथियुस 6:12; 1 यूहन्ना 4:15)। वचन 10 में "धर्मी

---

[1] "प्रभु" शब्द (यूनानी मेंः कुरियोस) निर्गमन 3:14 में पाए जाने वाले इब्रानी शब्द "यहोवा" (इब्रानी मेंः याहवे) का अनुवाद है (तुलना करेंः यशायाह 40:3 की मरकुस 1:3 के साथ)! 1 कुरिन्थियों 12:3 को भी पढ़ें।

[2] यूनानी मेंः ho ón epi pantón Theos.

ठहराया जाना" और "उद्धार" समानार्थी शब्द इसलिए हैं, क्योंकि वचन 9 में विश्वास करने और अंगीकार करने दोनों का उत्पाद उद्धार है। उद्धार की उत्पत्ति मन में होती है और इसे मुँह के माध्यम से अभिव्यक्ति प्राप्त होती है। विश्वास धर्मी ठहराए जाने की ओर अगुवाई करता है (रोमियों 4:5 से तुलना करें) और उसी प्रकार से परमेश्वर के अनन्त क्रोध से उद्धार की ओर भी अगुवाई करता है (रोमियों 1:16; 5:9-10 से तुलना करें)। विश्वास एक ऐसा उपकरण है जिससे लोग धर्मी ठहराए जाते हैं। विश्वास करना ऐसे खाली हाथ के समान है जो अनुग्रह के द्वारा परमेश्वर के उद्धार को ग्रहण करता है। धर्मी ठहराए जाने (उद्धार) के सम्बन्ध में "विश्वास करने" और "अंगीकार करने" में एक समान ही क्रिया या प्रभाव नहीं हैं। बिना विश्वास किए "अंगीकार करना" व्यर्थ है (मत्ती 7:21-23 से तुलना करें)। और बिना अंगीकार किए "विश्वास करना" मसीह को अपनाने से इन्कार करना है (तुलना करें मत्ती 10:32; यूहन्ना 12:42)। धर्मी ठहराए जाने (उद्धार) के लिए मन में विश्वास करना अत्यन्त आवश्यक है (यूहन्ना 3:18,36 से तुलना करें)। और भले कामों के समान मुँह से अंगीकार करना इस बात का प्रमाण है कि मन में पाया जाने वाला विश्वास असली और खरा है (इफिसियों 2:8-10; 2 कुरिन्थियों 4:13; याकूब 2:17-22; 1यूहन्ना 3:18-20)। जो लोग वास्तव में विश्वास करते हैं वे उस बात को कहने में सहायता नहीं कर सकते हैं जो उन्होंने देखा या सुना है (प्रेरितों के काम 4:20; 1तीमुथियुस 6:12; 1 यूहन्ना 4:15)। वचन 10 में "धर्मी ठहराया जाना" और "उद्धार" समानार्थी शब्द इसलिए हैं, क्योंकि वचन 9 में विश्वास करने और अंगीकार करने दोनों का उत्पाद उद्धार है। उद्धार की उत्पत्ति मन में होती है और इसे मुँह के माध्यम से अभिव्यक्ति प्राप्त होती है। विश्वास धर्मी ठहराए जाने की ओर अगुवाई करता है (रोमियों 4:5 से तुलना करें) और उसी प्रकार से परमेश्वर के अनन्त क्रोध से उद्धार की ओर भी अगुवाई करता है (रोमियों 1:16; 5:9-10 से तुलना करें)। विश्वास एक ऐसा उपकरण है जिससे लोग धर्मी ठहराए जाते हैं। विश्वास करना ऐसे खाली हाथ के समान है जो अनुग्रह के द्वारा परमेश्वर के उद्धार को ग्रहण करता है।

10:11-13

प्रश्न 4. **यीशु मसीह के प्रथम आगमन के पश्चात से यहूदी और अन्यजाति (गैर यहूदी) लोगों के मध्य में कोई अंतर क्यों नहीं रह गया है?**

ध्यान दें। यीशु मसीह के प्रथम आगमन के पश्चात, अब यहूदी और अन्यजाति लोगों के मध्य में कोई अंतर नहीं है, और ऐसा इन तीन कारणों से हैः

- मसीह में पाए जाने वाले सारे ही विश्वासियों को परमेश्वर की एक प्रजा कर दिया गया है। अन्यजाति राष्ट्रों से आने वाले यीशु मसीह के विश्वासियों और यहूदियों में से आने वाले यीशु मसीह के विश्वासियों को "मसीह में एक नया मनुष्य बना दिया गया है" और "परमेश्वर की प्रजा के सह नागरिक बना दिया गया है" (इफिसियों 2:11-22)। वे "इस्राएल (परमेश्वर की प्रजा) के उत्तराधिकारी", "एक देह (कलीसिया) के सदस्य" और "मसीह में प्रतिज्ञा के भागीदार" होने में पूर्ण रूप से एक समान आधार पर हैं (इफिसियों 3:2-6; तुलना करें 2 कुरिन्थियों 1:20-22 से)। "तब एक ही झुंड और एक ही चरवाहा होगा" (यूहन्ना 10:16)!
- यीशु मसीह जगत में रहने वाले सारे ही लोगों का प्रभु है (तुलना करें मत्ती 28:18; फिलिप्पियों 2:11)।
- सुसमाचार सब लोगों के लिए उपलब्ध है। इस पृथ्वी के हर एक राष्ट्र में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए उद्धार पाने के नियम एक समान ही हैंः उसे अपने मन में यह विश्वास करना आवश्यक है कि यीशु मसीह उसके पापों के लिए उसके बदले में क्रूस पर मरा और मृतकों में से जी उठा था (इसी प्रकार से, यह कि यीशु मसीह जीवित है)! उसे उद्धार पाने के लिए यीशु मसीह के नाम[3] को पुकारना है; और उसे अंगीकार करना आवश्यक है कि यीशु मसीह ही प्रभु है (वचन 9 और 13)।

---

3 प्रभु के "नाम" का अर्थ वही है जैसा प्रभु ने स्वयं को बाइबल में प्रकट किया है और इसका अर्थ वह नहीं है जैसा संसार के लोग, अन्य धर्मों के सदस्य, धर्मशास्त्र, दर्शनशास्त्र या विज्ञान उसके बारे में विचार करते हैं।

(1) पुराने नियम के समय में मसीह में विश्वास करने वालों और नए नियम के समय में ख्रीस्त पर विश्वास करने वालों के मध्य में कोई भी अंतर नहीं है (रोमियों 10:11)

पौलुस यहाँ रोमियों 9:33ब (यशायाह 28:16) को दोहराता है, परन्तु उसमें "सभी या जो कोई" शब्द को जोड़ता है। "जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह लज्जित न होगा" (रोमियों 10:11)। पौलुस "सभी या जो कोई" सभी शब्द को इसलिए जोड़ पाता है, क्योंकि जिस प्रकार से पुराने नियम के समय में यहूदियों को धर्मी ठहराया गया था और जिस प्रकार से नए नियम के समय में यहूदियों और अन्यजातियों को धर्मी ठहराया जा रहा है, उसमें कोई भी अंतर नहीं है। और यहूदियों के लिए स्वीकार करने हेतु यह एक अत्यन्त कठिन सत्य था। क्या पौलुस वास्तव में यह घोषणा करता है कि यहूदी लोग, जो अब्राहम के बड़े विशेषाधिकार प्राप्त वंशज थे, वे परमेश्वर के दृष्टि में गैर यहूदियों की तुलना में कुछ भी अच्छे नहीं थे?

कुछ गैर यहूदी मसीहियों के लिए भी स्वीकार करने हेतु यह एक कठिन सत्य है, क्योंकि उन्होंने हमेशा से ही यह विश्वास किया था कि इस्राएल की वास्तविक प्रजा या यहूदी लोग परमेश्वर के चुने हुए लोग थे और यह कि परमेश्वर के पास इस्राएल की वास्तविक प्रजा के लिए भविष्य में एक विशेष योजना है। वे पुराने नियम के प्रकाशन में कुछ विशेष भविष्यद्वाणियों के आधार पर इस पर विश्वास करते हैं।

हालाँकि, नए नियम के प्रकाशन की अभिभूत करने वाली ज्योति स्पष्ट रूप से यह सिखाती है कि यद्यपि पुराने नियम के समय में यहूदी राष्ट्र को कुछ विशेषाधिकार हासिल थे (रोमियों 9:4-5; इफिसियों 2:11-13), परन्तु यीशु मसीह के प्रथम आगमन के बाद से परमेश्वर यहूदी तथा गैर यहूदी लोगों के मध्य में और इस्राएल राष्ट्र तथा संसार के दूसरे अन्यजाति राष्ट्रों के मध्य में अब कोई अंतर नहीं करता है (रोमियों 10:12; 1 कुरिन्थियों 12:13; गलातियों 3:28; इफिसियों 3:2-6; कुलुस्सियों 3:11; प्रकाशितवाक्य 21:10-14)!

पुराने नियम के समय में, यहूदियों का भविष्य में आने वाले मसीह पर विश्वास करने के द्वारा उद्धार किया गया था (तुलना करें उत्पत्ति 15:6; गलातियों 3:6-9)। जिन यहूदियों ने विश्वास नहीं किया था उनको अस्वीकार कर दिया गया था (यशायाह 1:9; 10:20-23; होशे 1:6,9)। पुराने नियम के समय में प्रभु पर विश्वास करने वाले गैर यहूदियों को भी परमेश्वर की पुराने नियम की प्रजा में शामिल कर लिया गया था (यशायाह 56:1-8)। नए नियम के समय में, केवल यहूदियों का ही नहीं, परन्तु गैर यहूदियों (अन्यजातियों) का भी, *मसीह जो आ चुका है उस पर विश्वास करने के द्वारा उद्धार किया गया है* और उनको परमेश्वर की एकमात्र प्रजा में शामिल कर लिया गया है (रोमियों 1:16-17; 2:11; 3:10-18,22-24,29-30; 4:9-12; 5:18-19; 9:24; 10:12; 11:32; 1 कुरिन्थियों 7:19; गलातियों 3:9,29; 5:6; 6:15; इफिसियों 2:14-18; 3:2-6; कुलुस्सियों 3:11; 1 पतरस 2:9-10)।

(2) यहूदियों के प्रभु और अन्यजातियों के प्रभु के मध्य में कोई भी अंतर नहीं है (रोमियों 10:12)

"वह सब का प्रभु है; और अपने सब नाम लेने वालों के लिए उदार है। क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।" पुराने नियम के समय में यह पहले से ही सत्य था (योएल 2:32) और नए नियम के समय में अभी भी सत्य है (प्रेरितों के काम 2:21; रोमियों 10:13)। केवल एकमात्र जीवित परमेश्वर अस्तित्ववान है। "मुझ से पहले कोई ईश्वर न हुआ, और न मेरे बाद कोई होगा। मैं ही यहोवा हूँ, और मुझे छोड़ (प्रभु) कोई उद्धारकर्ता नहीं" (यशायाह 43:10-11)। वही एकमात्र परमेश्वर यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले यहूदियों का भी परमेश्वर है और यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले गैर यहूदियों का भी परमेश्वर है (रोमियों 3:29)।

यीशु मसीह ने स्वयं को जगत के सब लोगों और सब चीजों पर प्रभु और राजा के रूप में प्रकट किया (मत्ती 28:18; इफिसियों 1:20-23; प्रकाशितवाक्य 17:14)। पृथ्वी पर निवास करने वाले सब लोगों पर यह यीशु मसीह का प्रभुत्व ही है जिसके कारण से पृथ्वी पर निवास करने वाली जातियों के मध्य में कोई भी अंतर नहीं है! परमेश्वर सम्पन्न है (हाग्गै 2:9; भजन 5:10-12) पृथ्वी पर रहने वाले उसके सब प्राणियों के लिए (प्रेरितों के काम 14:17) और वह सब विश्वासियों को यीशु मसीह में सब प्रकार की आशीषों से आशीषित करता है (इफिसियों 1:3; 2:7)। "मसीह में ईश्वरत्व की सारी सम्पूर्णता सदेह वास करती है" (कुलुस्सियों 2:9) और पृथ्वी के सब राष्ट्रों के मसीही उसकी सम्पूर्णता से एक के बाद दूसरी आशीष (अनुग्रह) को प्राप्त करते हैं (यूहन्ना 1:16-17)।

(3) **प्रभु का नाम लेने वाले यहूदी या गैर यहूदी के मध्य में कोई भी अंतर नहीं है (रोमियों 10:13)।**

पौलुस योएल 2:32 का उद्धरण देता है, "जो कोई यहोवा से प्रार्थना करेगा, वह छुटकारा पाएगा।" इसके साथ पौलुस पुराने नियम के प्रकाशन से यह पुष्टि करता है कि यहूदी या गैर यहूदी के मध्य में कोई भी अंतर नहीं है। "प्रभु का नाम लेना" सर्वप्रथम उस प्रार्थना को संदर्भित करता है जब कोई व्यक्ति यीशु मसीह को अपने हृदय और जीवन में आने के लिए कहता है। परन्तु उसके बाद में यह प्रभु की निरंतर चलने वाली आराधना को भी संदर्भित करता है। अच्छे से ध्यान दें कि पौलुस परमेश्वर (यहोवा) (इब्रानी में: याहवे) को संदर्भित करने वाले पुराने नियम के अनुच्छेद को प्रभु (यूनानी में: कुरियोस) यीशु मसीह में बिना विशिष्टता प्रकट किए लागू करता है! यह इस बात का एक और प्रमाण है कि प्रेरित पौलुस ने शिक्षा दी थी कि यीशु मसीह ही परमेश्वर है (रोमियों 9:5)। यह नए नियम के मसीहियों को अलग करने वाला चिन्ह है कि उन्होंने यीशु मसीह को "प्रभु" (यूनानी में: कुरियोस) नाम दिया। इसी कारण से उन्होंने केवल परमेश्वर को दी जाने वाली आराधना से प्रभु यीशु मसीह की आराधना भी की थी (मत्ती 14:33; 28:9,17; लूका 24:52; यूहन्ना 9:38; प्रकाशितवाक्य 5:6-14)!

क्योंकि यहूदी और अन्यजाति के मध्य में कोई भी अंतर नहीं है, इसलिए सब लोगों पर चाहे यहूदी हो या गैर यहूदी, सुसमाचार का प्रचार किया जाना चाहिए, ताकि जितना सम्भव हो अधिकाधिक लोग बच जाएँ।

10:14-15

प्रश्न 5. **मसीहियों को सुसमाचार का प्रचार किस प्रकार से करना चाहिए?**

ध्यान दें। रोमियों 10:14-15 कहता है, "फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम कैसे लें? और जिसके विषय सुना नहीं उस पर कैसे विश्वास करें? और प्रचारक बिना कैसे सुनें? और यदि भेजे न जाएं? तो कैसे प्रचार करें? जैसे लिखा है, "उनके पांव क्या ही सुहावने हैं, जो अच्छी बातों का सुसमाचार सुनाते हैं!"

(1) **सुसमाचार का प्रचार करने की अनिवार्यता।**

यह वचन सिखाते हैं कि हर एक जन पर सुसमाचार का प्रचार किया जाना चाहिए। सुसमाचार के अनेक प्रारूपों में से किसी के द्वारा इसका प्रचार किए बिना, कोई भी जन यीशु मसीह पर विश्वास में नहीं आ सकता है।

(2) **उद्धार की प्रक्रिया का ऐतिहासिक क्रम।**

मानवीय दृष्टिकोण से देखा गया उद्धार की प्रक्रिया का ऐतिहासिक क्रम विपरीत क्रम में दिया गया है, इस कारण से परिणाम का उल्लेख पहले किया गया है और कारण का उल्लेख अंत में किया गया है। अधिकार प्राप्त संदेशवाहक सुसमाचार का *प्रचार करते हैं।* लोग सुसमाचार को *सुनते हैं।* वे सुसमाचार पर *विश्वास करते*

हैं (अर्थात्, यीशु मसीह को अपने हृदय और जीवन में ग्रहण करते हैं तथा अपने मुँह से उसका अंगीकार करते हैं)। उन्होंने *उद्धार पा लिया है* (या धर्मी ठहराए गए हैं)। बाइबल के इस अनुच्छेद में विशेष रूप से यहूदी दृश्य में हैं (रोमियों 10:1-3,19,21; 11:1)। फिर भी, उद्धार की यह प्रक्रिया अन्यजातियों के लिए भी सत्य है। हर एक व्यक्ति को उस पर प्रतिक्रिया देना आवश्यक है जो वह सुनता है।

(3) **सुसमाचार के अधिकार प्राप्त संदेशवाहक।**

वह संदेशवाहक इसलिए अधिकार प्राप्त संदेशवाहक हैं, क्योंकि यीशु मसीह ने उनको भेजा था। "जो तुम्हारी सुनता है, वह मेरी सुनता है; और जो तुम्हें तुच्छ जानता है, वह मुझे तुच्छ जानता है; और जो मुझे तुच्छ जानता है, वह मेरे भेजने वाले को तुच्छ जानता है" (लूका 10:16; तुलना करें 2 कुरिन्थियों 5:18-20 से)। सुसमाचार का प्रचार करने वालों को यह जान लेना आवश्यक है कि यीशु मसीह ने सुसमाचार का प्रचार करने के लिए उनको बुलाया और भेजा है। जिन लोगों को बुलाया नहीं गया और भेजा नहीं गया, वे झूठे भविष्यद्वक्ता हैं जो अपने मन की भ्रामक बातों का, झूठे स्वप्नों का, लापरवाह झूठों का और परमेश्वर के वचन की विकृतियों का प्रचार करते हैं (यिर्मयाह 23:9-40 पढ़ें)। परन्तु सुसमाचार का प्रचार करने वाले अपने श्रोताओं पर महान् आनन्द उंडेलते हैं (यशायाह 52:7 से तुलना करें)।

(4) **यीशु मसीह के साथ व्यक्तिगत आमना-सामना तथा मुलाकात ही वास्तव में सुसमाचार का सुनना होता है।**

लोगों को सुसमाचार सुनना चाहिए, अर्थात् लोगों को केवल उस बात को समझना ही नहीं चाहिए जो वे सुनते हैं, परन्तु *उस व्यक्ति को उत्तर देने के योग्य* भी होना चाहिए *जो उनसे बात कर रहा है!* ध्यान दें कि रोमियों 10:14 शाब्दिक रूप से कहता है, "फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम क्योंकर लें? और जिसकी नहीं सुनी, उस पर (उसमें) क्योंकर विश्वास करें? (न किः "*उसके बारे में जिसकी* उन्होंने नहीं सुनी)? लूका 9:35 देखें, "यह मेरा प्रिय पुत्र है, तुम्हें अवश्य ही इसकी बात सुननी चाहिए! (यूनानीः dia rématos Christos) (अनिवार्य)। स्वयं परमेश्वर (उसकी वाणी) के पुत्र को अवश्य सुनना चाहिए (केवल उसके बारे में संदेश को ही नहीं)!

सुसमाचार के प्रचार में, लोगों को सामान्य रूप से यीशु मसीह के बारे में ही नहीं सुनना चाहिए, वरन् स्वयं यीशु मसीह को उनसे बातें करते हुए सुनना चाहिए! जब कभी भी सुसमाचार का प्रचार किया जाता है, यीशु मसीह स्वयं लोगों से बातें करना चाहता है। रोमियों 10:17 बताता है, "विश्वास सुनने से आता है और सुनना मसीह के (न किः उसके बारे में) विशेष वचन से होता है (यूनानी मेंः dia rématos Christos)! "यीशु मसीह के बारे में सुनना" यीशु मसीह से मुलाकात करना नहीं है। परन्तु "स्वयं यीशु मसीह को आप से बातें करते हुए सुनना" उसके साथ व्यक्तिगत मुलाकात करना है! जो वचन यीशु मसीह आप से व्यक्तिगत रूप से बोलते हैं, वही वह वचन है जो आप के हृदय पर पकड़ बनाता है और आप की सोच को बदल देता है!

(5) **यीशु मसीह के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध को विश्वास कहते हैं।**

यीशु मसीह में विश्वास किसी व्यक्ति को सुनाए गए सुसमाचार में यीशु मसीह के किसी विशेष वचन से व्यक्तिगत सामना होने से लाया जाता है। उसी प्रकार से यीशु मसीह से व्यक्तिगत मुलाकात को विश्वास कहते हैं जिसमें कि यीशु मसीह के साथ एक व्यक्तिगत सम्बन्ध (जुड़ाव) स्थापित किया जाता है! यीशु मसीह के बारे में सामान्य रूप से कुछ सत्यों को जान लेने को ही विश्वास नहीं कहते हैं। इसके बजाए उसका अनुसरण करने की उसकी व्यक्तिगत बुलाहट का आज्ञापालन करने को, उसका अनुसरण करने के लिए पहला कदम उठाने को जोखिम को और उसका अनुसरण करते रहने के निर्णय को विश्वास कहा जाता है। यीशु मसीह में बढ़ते हुए भरोसे को विश्वास कहा जाता है। विश्वास का अर्थ है कि इससे पहले कि आप उद्धार के लिए उसके नाम

को पुकारें, किसी भी अन्य आत्मविश्वास (विश्वास) का त्याग करना और अपनी एकमात्र सहायता के रूप में यीशु मसीह के सम्मुख आत्मसमर्पण करना।

10:16-21

प्रश्न 6. **सुसमाचार की ओर प्रतिक्रिया करने की असफलता को क्षमा क्यों नहीं किया गया है?**

ध्यान दें। निश्चित रूप से इस्राएली लोगों ने सुसमाचार सुना हुआ था, परन्तु अधिकांश इस्राएलियों ने सुसमाचार को अस्वीकार कर दिया था (रोमियों 10:16-18)। निश्चित रूप से इस्राएली लोग आदर के साथ बहुत से अन्यजाति लोगों आशीष देने और उद्धार देने के परमेश्वर के उद्देश्य को जानते थे (उत्पत्ति 22:18), तब पर भी इस्राएल के बहुत सारे लोग हठीले होकर लगातार परमेश्वर की अवज्ञा करते रहे थे। स्तिफनुस ने कहा था, "हे हठीले, और मन और कान के खतनारिहत लोगो, तुम सदा पवित्र आत्मा का साम्हना करते हो। जैसा तुम्हारे बाप दादे करते थे, वैसे ही तुम भी करते हो।" (प्रेरितों के काम 7:51)! जैसा कि नया नियम प्रदर्शित करता है, इतिहास उसी प्रकार से खुलता है जिस प्रकार से होने का भविष्यद्वक्ताओं ने अनुमान लगाया था। विश्वास न करने वाले यहूदी लोगों के पास परमेश्वर और उसके मसीह को अस्वीकार करने का दोष लगाने के लिए उनके स्वयं के अलावा कोई भी नहीं था। निश्चित रूप से विश्वास न करने वाले यहूदी लोगों का परमेश्वर का परिणामी अस्वीकरण मनमाना नहीं था (रोमियों 10:19-21).

जबकि रोमियों 10:14-15 यह सिखाता है कि कुछ लोग सुसमाचार का प्रचार करने में विश्वास से परिपूर्ण होकर प्रतिक्रिया करेंगे, वहीं रोमियों 10:16-21 यह सिखाता है कि अन्य लोग सुसमाचार की ओर प्रतिक्रिया नहीं करेंगे। यह पुराने नियम में भविष्यद्वक्ताओं के समय में होने के साथ ही साथ नए नियम में यीशु के (यूहन्ना 1:11) और प्रेरितों के समय में भी पहले से ही हो चुका है (प्रेरितों के काम 13:45-46)। शुभ संदेश का प्रचार तो किया गया था, परन्तु सब इस्राएलियों ने उस शुभ संदेश को स्वीकार नहीं किया था (तुलना करें इब्रानियों 2:1; इब्रानियों 4:1-2 से)। इस बिन्दु पर, पौलुस रोमियों 9 से 11 अध्यायों के अपने विषय पर वापस लौटता है, और इस्राएल की वास्तविक प्रजा में से बहुत सारे लोगों के अविश्वास और अनाज्ञाकारिता की व्याख्या करता है।

(1) **इस्राएल की वास्तविक प्रजा ने सुसमाचार को स्वीकार नहीं किया था (रोमियों 10:16)।**
यह उक्ति सच में ऐसा कहती है कि सारे ही इस्राएलियों ने शुभ संदेश को स्वीकार नहीं किया था।" यद्यपि इस्राएल की वास्तविक प्रजा पर सुसमाचार का प्रचार किया गया था, परन्तु सारे ही इस्राएलियों ने सुसमाचार की ओर प्रतिक्रिया नहीं दी थी। बल्कि, बहुत सारे यहूदियों ने सुसमाचार को अस्वीकार कर दिया था (रोमियों 9:27; 10:21; तुलना करें यशायाह 53:1; यूहन्ना 1:11; 1 कुरिन्थियों 10:5 से)।

(2) **सुसमाचार को सुनने से विश्वास आता है (रोमियों 10:17)।**
परमेश्वर के संदेश की ओर प्रतिक्रिया करने हेतु बाइबल अपने में बहुत सारी चेतावनियों को समाहित करती है (मत्ती 11:15; 13:9,43; लूका 8:8,18; 14:35; प्रकाशितवाक्य 2:7,11,17,29; 3:6,13,22; 13:9)। सुसमाचार में जिस *वचन* का यहूदियों ने सामना किया था वह उस वचन की तुलना में कुछ भी कम नहीं था जो यीशु ने स्वयं उनसे बोला था! उन पर किया गया सुसमाचार का प्रचार यीशु मसीह के वचनों का सामना करना था और तत्पश्चात स्वयं यीशु के साथ एक मुलाकात करना था।

(3) **इस्राएल की वास्तविक प्रजा ने सुसमाचार को सुना था (रोमियों 10:18)।**
इस्राएल की वास्तविक प्रजा इस बात का प्रतिरोध नहीं कर सकती थी कि उन्होंने सुसमाचार को नहीं सुना था। "मसीह के आत्मा ने भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से बातें की थीं" (1 पतरस 1:10-12)।

- मूसा की प्रथम पाँच पुस्तकों में से उन्होंने पहले से ही मसीह के वचनों के सुन लिया था (तुलना करें उत्पत्ति 15:6; गलातियों 3:8; व्यवस्थाविवरण 30:11-14; रोमियों 10:6-8 से)।
- पुराने नियम के समय में उन्होंने पहले से ही मसीह के वचनों के सुन लिया था। पौलुस भजन 19:4 का उद्धरण रोमियों 10:18 में देता है। भजन 19:1-6 में, भजनकार *परमेश्वर के सामान्य प्रकाशन* के विषय में उसके सृष्टि करने और मितव्ययिती के कामों के माध्यम से बताता है, भजन 19:7-14 में, भजनकार *परमेश्वर के विशेष प्रकाशन* के विषय में उसके पुराने नियम के वचनों के माध्यम से बताता है। सम्पूर्ण बाइबल में यह शिक्षा प्रदान की गई है कि परमेश्वर के सामान्य और विशेष प्रकाशन अनुपूरक हैं (प्रेरितों के काम 17:24-31)। जबकि परमेश्वर के सामान्य प्रकाशन के विषय में सम्पूर्ण मानवीय इतिहास में बिना किसी अंतर के प्रचार किया गया था (तुलना करें रोमियों 1:19-20; 2:15; भजन 19 अध्याय से), वहीं इस्राएलियों पर परमेश्वर के विशेष प्रकाशन का सम्पूर्ण पुराने नियम के पवित्रशास्त्र में प्रचार किया गया था (रोमियों 3:21-22 से तुलना करें)।
- नए नियम के समय में उन्होंने पहले से ही मसीह के वचनों के सुन लिया था। सुसमाचार का प्रचार किया गया था, चेले बनाए गए थे, और बिना किसी अंतर के यहूदियों और गैर यहूदियों तक बाइबल पहुँच गई थी (मत्ती 24:14; 28:19; प्रेरितों के काम 1:8; रोमियों 1;16; 2 पतरस 3:1-2, 15-16)। प्रेरितों के दिनों में, सारे ही ज्ञात संसार में शीघ्रता से सुसमाचार फैल गया था (रोमियों 15:8-12,22-24; फिलिप्पियों 1:12-13; कुलुस्सियों 1:6; यूहन्ना 12:19; प्रेरितों के काम 2:41,47; 4:4; 17:6)। सुसमाचार के प्रचार के माध्यम से संसार के दूरस्थ भागों में, परमेश्वर के सामान्य प्रकाशन का प्रतिमान ही अब परमेश्वर के विशेष प्रकाशन का प्रतिमान बन गया है!

(4) **इस्राएल की वास्तविक प्रजा ने सुसमाचार को समझ लिया था (रोमियों 10:19)।**

यहूदी लोग इस बात को नहीं बोल सकते थे कि उन्होंने सुसमाचार को समझा नहीं था। यह उनकी *अनभिज्ञता* नहीं थी, परन्तु यह उनकी *हठीली अनिच्छा* ही थी जो उनके अविश्वास का कारण थी। इस्राएली प्रजा को उद्धार के मार्ग के विषय में पर्याप्त ज्ञान और समझ प्राप्त थी ताकि उनको उनके अविश्वास के प्रति पूर्ण रूप से उत्तरदायी ठहराया जाए।

पौलुस व्यवस्थाविवरण 32:21इ-22 में मूसा की बातों का उद्धरण देता है. "क्योंकि इस्राएल ने ऐसी वस्तु मान कर जो ईश्वर नहीं (प्रतिमाएँ) हैं, परमेश्वर में जलन उत्पन्न की, इसलिये परमेश्वर भी उनके द्वारा जो प्रजा नहीं हैं इस्राएल के मन में जलन उत्पन्न करेगा (अर्थात्, वह कलीसिया जो मुख्य रूप से गैर यहूदी लोगों से मिल कर बनी है)।" अपनी मूर्तिपूजा से इस्राएल ने परमेश्वर के क्रोध की अग्नि को भड़का दिया जो मृत्यु के स्थान (नरक) में जलती रहेगी और उस देश तथा उसके लोगों को भस्म कर देगी। "एक व्यक्ति कैसे एक हजार का पीछा कर सकता है या दो व्यक्ति कैसे दस हजार से लड़ सकते हैं, जब तक कि उनकी चट्टान ने उनको (विश्वास न करने वाले इस्राएली) बेच न दिया हो और उनको त्याग न दिया हो (व्यवस्थाविवरण 32:21-22,30; यशायाह 30:15-17)? विश्वास करने वालों के लिए सामान्य नियम इसके विपरीत हैः "और तुम में से पाँच मनुष्य सौ को और सौ मनुष्य दस हजार को खदेड़ेंगे" (लैव्यव्यवस्था 26:8)। "तुम में से एक मनुष्य हजार मनुष्यों को भगाएगा, क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुम्हारी ओर से लड़ता है" (यहोशू 23:10)! उन मूर्तिपूजा करने वाले लोगों की (उनकी प्रतिमाएँ) "चट्टान" सच्चे विश्वासियों की चट्टान (यहोवा) के समान नहीं है" (व्यवस्थाविवरण 32:31-33)!

इस्राएल के अपने लोगों के बजाए एक अन्य अत्यन्त बड़ा लोगों का समूह उठेगा (अर्थात्, कलीसिया) जो विभिन्न (मुख्य रूप से अन्यजाति) देशों के विश्वासियों से बना होगा। परमेश्वर कहता है, "इसलिए मैं भी उनके द्वारा जो मेरी प्रजा नहीं हैं, उनके मन में जलन उत्पन्न करूँगा; और एक मूढ़ जाति के द्वारा उन्हें रिस

दिलाऊँगा" (व्यवस्थाविवरण 32:21)। प्राथमिक रूप से पुराने नियम में इस देश के पास परमेश्वर के विशेष प्रकाशन का कोई ज्ञान या समझ नहीं होगी। तौभी, जो विशेषाधिकार इस्राएल को प्रदान किए गए थे, वे उन लोगों को प्रदान किए जाएँगे "जो प्रजा नहीं हैं" (अर्थात् कलीसिया)।

मत्ती 21:42-44 में यीशु के मन में व्यवस्थाविवरण 32 अध्याय था जब वह कहता है, "जिस पत्थर (चट्टान) को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने के सिरे का पत्थर हो गया"; यह प्रभु की ओर से हुआ... इसलिए परमेश्वर का राज्य इस्राएल से ले लिया जाएगा; और ऐसी जाति को जो उसका फल लाए, दिया जाएगा" (मत्ती 21:42-44)।

प्रेरितों के काम 13:44-48 में पौलुस के मन में भी व्यवस्थाविवरण 32 अध्याय था जब वह कहता है, "अवश्य था, कि परमेश्वर का वचन पहले तुम्हें (उदाहरण के लिए यहूदियों को) सुनाया जाता। परन्तु जब कि तुम उसे दूर करते हो, और अपने को अनन्त जीवन के योग्य नहीं ठहराते, तो देखो, हम (प्रेरित, प्रचारक, मसीही कलीसिया) अन्यजातियों (गैर यहूदियों) की ओर फिरते हैं। क्योंकि प्रभु ने हमें यह आज्ञा दी है: "कि मैंने तुझे (एकवचन) (अर्थात्, अपने प्रेरितों के साथ नए नियम की कलीसिया को) अन्यजातियों के लिए ज्योति ठहराया है (मत्ती 5:14 से तुलना करें), ताकि तू पृथ्वी के छोर तक उद्धार का द्वार हो।" "यह सुन कर अन्यजाति आनन्दित हुए, और परमेश्वर के वचन की बड़ाई करने लगे: और जितने अनन्त जीवन के लिए ठहराए गए थे, उन्होंने विश्वास किया" (प्रेरितों के काम 13:48)।"

परन्तु इब्रानी भाषा में यशायाह 49:6 कहता है, "यह तो हलकी सी बात है कि तू याकूब के गोत्रों का उद्धार करने और इस्त्राएल के रक्षित लोगों को लौटा ले आने के लिये मेरा सेवक ठहरे; मैं तुझे जाति-जाति के लिये ज्योति ठहराऊंगा कि मेरा उद्धार पृथ्वी की एक ओर से दूसरी ओर तक फैल जाए।" इब्रानी भाषा और यूनानी भाषा दोनों के लेख सत्य हैं: अन्यजातियों के लिए ज्योति ठहराने के लिए परमेश्वर ने यीशु मसीह (यूहन्ना 8:12) और उसकी कलीसिया (मत्ती 5:14) को भेजा।

उसी प्रकार से, यहूदियों ने न केवल सुसमाचार को और उद्धार पाने की शर्तों को समझा, वरन् यह भी समझा कि परमेश्वर ने अन्यजातियों में सुसमाचार प्रचार करने और उनको उद्धार देने के लिए अपने प्रकाशन के विस्तार हेतु योजना बनाई थी! इतिहास उसी प्रकार से खुला था जैसा होने का भविष्यद्वक्ताओं ने अनुमान लगाया था।

(5) इस्राएल की वास्तविक प्रजा अपने अविश्वास, अनाज्ञाकारिता और हठ से होकर गुजरती है (रोमियों 10:20)।

यशायाह 65:1 में यशायाह द्वारा कही गई बातों का पौलुस उद्धरण देता है। जब कि यशायाह इस्राएली प्रजा को संदर्भित करता है, परन्तु पौलुस उन्हीं बातों को अन्यजातियों पर लागू करता है।

पुराने नियम में, इस्राएल ने शिकायत की थी कि यहोवा (इब्रानी में: याहवे) ने स्वयं को स्वर्ग में छिपा लिया था (यशायाह 63:9) और यह कि चुप होकर अपने आप को रोके हुए था (यशायाह 64:12)। यहोवा ने इस्राएल की शिकायत का उत्तर दिया और कहा वह स्वयं को इस्राएल पर प्रकट करने की बड़ी इच्छा रखता था और वास्तव में उसने अपने आप को इस्राएल पर प्रकट किया था, इस तथ्य के बावजूद कि इस्राएल ने यहोवा से इसके लिए नहीं कहा था, न ही यहोवा की खोज की थी और न ही यहोवा के नाम को पुकारा था। यहोवा की स्वेच्छा और धीरज के बावजूद, इस्राएल ने अविश्वास (रोमियों 9:32), अनाज्ञाकारिता (इब्रानियों 4:1-6) और हठ (रोमियों 10:21) के साथ प्रत्युत्तर दिया। इस्राएल की वास्तविक प्रजा ने यहोवा के अनुग्रह को अस्वीकार कर दिया था। "तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो" (गलातियों 5:4)! इस्राएल की वास्तविक प्रजा ने धार्मिकता को इसलिए प्राप्त नहीं किया था, क्योंकि उन्होंने

(मसीही) विश्वास पर नहीं, परन्तु अपनी ही उपलब्धियों पर निर्माण किया था। उन्होंने "ठोकर के पत्थर पर ठोकर खाई" थी (रोमियों 9:32)।

जिस प्रकार से पौलुस ने उद्धरण तो होशे 2:23 और 1:10 का दिया था, परन्तु रोमियों 9:25-26 में अन्यजातियों पर *इसे लागू किया* था, उसी प्रकार से वह यशायाह 65:1 का उद्धरण देता है और रोमियों 10:20 में अन्यजातियों पर इसे लागू करता है। पुराने नियम के समय में, यहूदियों ने जिस समय पर यहोवा को खोजा भी नहीं था उस समय पर भी उन्होंने उसे पा लेने के विशेषाधिकार का आनन्द उठाया था। अब नए नियम के समय में, अन्यजाति लोग (और यहूदी लोग भी, यदि वे ऐसा करना चाहें तो) इस विशेषाधिकार का आनन्द उठाते हैं! पौलुस पुराने नियम के समय में परमेश्वर के निर्मोल और दयालु अनुग्रह का उद्धरण देता है और नए नियम के समय में इसे अन्यजाति देशों पर लागू करता है!

यह तथ्य कि अब परमेश्वर स्वयं को अन्यजातियों पर प्रकट कर रहा था और यह कि परमेश्वर अन्यजातियों को मिल गया था एक ऐसा सत्य था जिस पर बहुत से यहूदी आसानी से विश्वास नहीं कर पाए थे और यहाँ तक कि आज तक भी उसे स्वीकार नहीं कर पाए थे। यह तथ्य कि अजनबी और परदेशी भी परमेश्वर की वाचा पाए हुए लोगों का भाग (यशायाह 49:6; 56:1-8 से तुलना करें) *पूर्णतः एक समान नियमों पर* बन जाएँगे (इफिसियों 3:2-6) इस बात ने यहूदियों को क्रोधित कर दिया था। संसार की सब जातियों में सुसमाचार को फैलाने का उपोत्पाद इस्राएल की वास्तविक प्रजा[4] को उकसाना और क्रोध दिलाना है (रोमियों 11:14)। यह सत्य बल देता है कि न तो यहूदी लोग और न ही कोई और जाति या एकल व्यक्ति बाइबल के परमेश्वर पर किसी भी वास्तविक दावे को कर सकता है! परमेश्वर के पास जिसे वह चाहता है उस बदल देने का सम्प्रभुत्व अधिकार (विशेषाधिकार) है।

(6) **इस्राएल की वास्तविक प्रजा बाइबल के परमेश्वर और उसके मसीह का इन्कार करने के लिए उत्तरदायी बनी रहती है (रोमियों 10:21)।**

यीशु मसीह ने भजन 118:22-23 को उद्धरित किया था। वह "चट्टान" (व्यवस्थाविवरण 32:30) जिसे राजमिस्त्रियों (इस्राएल के धार्मिक अगुवों और शिक्षकों) ने मसीह के रूप में अस्वीकार कर दिया था, वही "सबसे ऊपर का पत्थर" हो गया' (अर्थात्, प्रत्येक विश्वासी के लिए उद्धारकर्ता और प्रभु)। इसीलिए, इस्राएल में पाए जाने वाले अविश्वासी और अनाज्ञाकारी लोगों से राज्य (और उसके विशेषाधिकार) ले लिए जाएँगे और "उसका फल लाने वाले लोगों को" दे दिए जाएँगे (यहूदियों और अन्यजातियों के मध्य में पाए जाने वाले विश्वासी और आज्ञाकारी लोग)। इस्राएल में पाए जाने वाले अविश्वासी और अनाज्ञाकारी लोगों ने उस पत्थर (यीशु मसीह) पर ठोकर खाई थी और चकनाचूर हो गए थे (मत्ती 21:41-45)! परन्तु प्रत्येक जाति में पाए जाने वाले विश्वासी और आज्ञाकारी लोगों के लिए वह पत्थर कोने का बहुमूल्य पत्थर बन जाएगा। वह व्यक्ति "जो उस पर भरोसा करता है कभी लज्जित न होगा" (1 पतरस 2:6-10)।

यशायाह 65:2 में से पौलुस यशायाह का उद्धरण देता है। परमेश्वर ने इस्राएल की वास्तविक प्रजा के विषय में कहा था, "मैं एक हठीली जाति के लोगों की ओर दिन भर फैलाए रहा" (मत्ती 23:37-38 से तुलना करें)। पौलुस अन्यजातियों पर प्रदर्शित किए गए अनुग्रह के साथ इस्राएल की निरंतर अनाज्ञाकारिता की विषमता को दर्शाता है। परमेश्वर का धीरज और प्रेम भरी दया किसी एक जाति के लिए नहीं थी, परन्तु एक निरंतर अनाज्ञाकारी और हठीली जाति के लिए भी थी। यह परमेश्वर के अनुग्रह में वृद्धि तो करता है, परन्तु उसी समय पर इस्राएल के बलवा करने की गहराई को भी प्रकट करता है।

---

4 इसके साथ ही इस्लाम इसलिए अपमान महसूस करता है, क्योंकि मक्का और मदीना में इस्लाम ने बहुत से सिद्धांतों को यहूदियों से अपना लिया था। उदाहरण के लिए, इस्लाम को मानने वाले यह दावा करते हैं कि परमेश्वर ने अपने आप को यीशु मसीह में प्रकट नहीं किया था, और यह कि यीशु मसीह, मसीहा नहीं है, और यह भी कि यीशु मसीह क्रूस पर नहीं मरा था और न ही मृतकों में से जिलाया गया था।

फिर भी, अन्यजातियों और यहूदियों के लिए बाइबल का संदेश आज भी यही है, "कि यदि तू अपने मुँह से *यीशु को प्रभु जान कर* अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास कर, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 11:23 से तुलना करें; इब्रानियों 4:1 से तुलना करें)!" यहूदियों

और गैर यहूदियों के लिए उद्धार पाने का एकमात्र तरीका यीशु मसीह पर विश्वास करना है (यूहन्ना 3:16; प्रेरितों के काम 4:12; प्रेरितों के काम 16:31)।

चरण 4. लागू करना। **अनुप्रयोग**

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 10:1-21 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

(याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

1. रोमियों 10:1-21 से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

10:1. आप के मन की इच्छा और परमेश्वर से की जाने वाली प्रार्थना संसार के खोए हुए लोगों के लिए हो जाए।

10:2. जैसा कि बाइबल में प्रकट किया गया है कि ऐसा धार्मिक उत्साह जो सत्य के ज्ञान पर आधारित नहीं है वह बिलकुल व्यर्थ है।

10:3. परमेश्वर के सम्मुख अपनी स्वयं की धार्मिकता को स्थापित करने का कभी प्रयास न करें। बजाए इसके, उसकी धार्मिकता को ग्रहण करें।

10:9-10. अपने पूरे मन से यीशु मसीह पर विश्वास करें और अन्यों पर अपने विश्वास का अपने मुँह से अंगीकार करें।

10:14-15. आश्वस्त रहें कि लोग तब तक विश्वास नहीं कर सकते हैं, जब तक कि वे सुसमाचार को सुन और समझ नहीं लेते हैं।

10:16. सुनिश्चित करें कि हर बार जब आप बाइबल के संदेश को सुनते हैं तो आप वास्तव में उसकी आज्ञाकारिता के अधीन हो जाते हैं।

10:19-20. जाकर उन लोगों को सुसमाचार सुनाएँ, जिन्होंने पहले कभी भी इस नहीं सुना है, क्योंकि परमेश्वर ने वायदा किया था कि वे परमेश्वर को पाएँगे।

2. रोमियों 10:1-21 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैं परमेश्वर के उस वचन की आज्ञाकारिता के निरंतर अधीन होते रहना चाहता हूँ, जिसे मैं अपने शान्त समय में पढ़ता हूँ और कलीसिया में सुनता हूँ।

मैं जाकर उन लोगों को सुसमाचार सुनाना चाहता हूँ, जिन्होंने पहले कभी भी इस नहीं सुना था।

चरण 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 10:1-21 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5 प्रार्थना (8 मिनट)

(प्रतिक्रियाएँ)

दूसरों के लिए प्रार्थना

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6 तैयारी (2 मिनट)

(सौंपा गया कार्य)

अगले अध्याय के लिए

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. **समर्पण।** चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 10:1-21 का **प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।**
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय।** प्रतिदिन **यशायाह 48,49,52 और 53** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ।
   पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. **स्मरण करना। (1) परमेश्वर की उपस्थितिः इब्रानियों 13:5-6।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. **शिक्षा देना।** लूका 16:1-13 में निहित **"चतुर भण्डारी" के दृष्टांत** की तैयारी करें। दृष्टांत का अर्थ समझाने के लिए छः निर्देशों का पालन करें।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर **अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें।** शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।